Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

होल्कर परगना आलमपुर में स्थित ऐतिहासिक शिव मंदिरों का वैभव

डॉ0 सुशील कुमार सोनी

अतिथि विद्वान–इतिहास
महारानी लक्ष्मीवाई उत्कृष्ट महाविद्यालय
ग्वालियर – मध्यप्रदेश

शिवाजी ने जिस विशाल मराठा साम्राज्य की स्थापना की थी वो उनकी मृत्यु के पश्चात् छिन्न भिन्न हो गया तत्पश्चात् स्थापित नव संगठन में मल्हार राव होल्कर जैसे महान योद्धा एंव विश्वासपात्र सरदार ने उत्तरी पश्चिमी भारत में मराठा साम्राज्य की धाक को स्थापित करने का पुनः प्रयास किया और होल्कर राज्य की स्थापना की। [1]

मल्हार राव एंव गोहद के राजा के मध्य हुये युद्ध के पश्चात आलमपुर गांव में 74 वर्श की आयु में मल्हार राव होल्कर का स्वर्गवास हो गया जहां उनकी छत्री आज भी स्थित है।[2]

इसके उपरान्त आलमपुर में होल्कर स्थापत्य के कई स्मारक स्थापित किये गये जिनमें से होल्कार राजवंश की धार्मिक आस्था के प्रतीक के रूप में आलमपुर के ऐतिहासिक शिव मंदिर उल्लेखनीय है । चूंकि अहिल्याबाई होल्कर शिव अनुयाई थी इसलिये उनके द्वारा आलमपुर में प्रमुख शिव मंदिरों का निर्माण कराया गया ।

हरि हरेश्वर मंदिर – होल्कर कालीन यह मंदिर उस स्थल के निकट स्थित है जहां पर श्रीमंत मल्हार राव होल्कर के जीवन में अन्तिम भवांस विराम पाई थी उस जगह पर तुलसी गृह बनवाया गया था । आलमपुर की प्राचीन वस्ती जिसे वेरूनाखेरा कहा जाता है उसके सर्वे क्रमांक 528 पर हरि हरे वर मंदिर का निर्माण अहिल्यावाई होल्कर के द्वारा सम्पन्न किया गया । तुलसीगृह से मंदिर की दूरी 151 फीट है ।[3]

आश्टांग योग शैली का यह मंदिर एक पक्के चबूतरे के बीचों – बीच बना हुआ है चबूतरे का क्षेत्रफल लगभग 50ग50 वर्गफीट है। परिक्रमायुक्त गर्भगृह बीच में है । परिक्रमा क्षेत्र स्तम्भ आधारित महरावों से युक्त है जिसके तीन तीन दरवाजे है दक्षिण दि ाा के पूर्वी किनारे पर उपर जाने के लिये सोपान लगे हुये है छत सपाट है इसी को आधार मानकर अश्ट पहलू आकार की गुम्बज निकाली गयी है जो उपर की ओर गोल है छत के चारों ओर चौकोर छिद्र युक्त चार फीट की दीवार लगी हुई है जिसके मुख्य भाग पर झरोखे है इस मंदिर की भूतल से उचाई 50 फीट है ।[4]

मंदिर पूर्वाभिमुखी है जिसके अन्दर गर्भगृह में जलहरि के मध्य में ि ावलिंग प्रतिश्ठित किया गया है । इसकी सबसे बडी वि ोशता ि ावलिंग के उपरी भाग पर कटाव करके जलहरी बनाई गई है, जो चोल व पल्लव कालीन कला भौली से मेल खाती है मंदिर का गर्भगृह भूतल के समानान्तर बना है जो मंदिर के जंघा भाग से 2.6 फीट गहराई में स्थित है । गर्भगृह में चारो ओर रतिकायें बनी हुई है जिसमें पूर्वाभिमुख क्रम ाः गणे ा, वरूण, भांकर एंव वटुक भैरव की प्रतिमायें प्रतिश्ठित है। इस मंदिर की सबसे बडी वि ोशता इसकी परिक्रमा में भाक्ति देवी दुर्गा की सिंह पर सवार संगमरमर की प्रतिमा भू–भाग से 2.6 फीट की उचाई पर पृश्ठ भाग पर सिंहासनारूढ है जिसे देखने को असफेर भर का जनसमुदाय आता है।

मंदिर के दक्षिण भाग पर अहिल्यावाई द्वारा निर्मित कूप अतिसुन्दर है आस पास के क्षेत्रों के लोगों की प्यास बुझाने का काम इसी कूप से किया जाता है।[5]

अब यह मंदिर आलमपुर कस्वे के अन्तर्गत ही आ गया है इस मंदिर की पूजा अर्चना के लिये होल्कर भाासकों द्वारा बारह बीघा भूमि लगाई गई है ।[6]

बनखण्डेश्वर शिव मंदिर – आलमपुर से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर बना यह मंदिर अत्यधिक प्राचीन है यह मंदिर राजपूत भौली से निर्मित है इस मंदिर के गर्भगृह में भगवान भूतनाथ ि ावलिंग के रूप में विराजमान है जो आग्नेय पत्थर के बने हुये प्रतीत होते है यह शिवलिंग सम्पूर्ण परगने का सबसे प्राचीन शिवलिंग है ।

(2) इस मंदिर का प्रवेश द्वार सत्रहवीं भाताब्दी का बना हुआ प्रतीत होता है मंदिर 60ग50 फीट के चबूतरे के बीच में 10ग10 फीट का गर्भगृह अंकित है जो कला का उत्कृश्ट उदाहरण है। ि ावलिंग की उंचाई लगभग 18 इंच के आस पास है ।[7]

साक्षात्कार के उपरान्त ज्ञात हुआ कि होल्कर काल में इस जीर्ण क्षीर्ण मंदिर का पुनरोद्धार कराया गया था ।

इस मंदिर की सबसे बडी वि ोशता यह है कि इस मंदिर में ि ावलिंग के साथ नंदी की मूर्ति नहीं है भाायद यह मंदिर किसी समय तांत्रिक तप स्थली रहा होगा। मंदिर का परिक्षेत्र 500ग500 फीट है जिसमें बगीचा लगा हुआ है इस मंदिर के वायें पा र्व पर हनुमान तथा दक्षिणी पार्श्व पर अश्ठभुजी मॉ संतोशी का लघु मंदिर बना है।

मल्हारी मार्तण्ड शिव मंदिर– राजपूत एंव मुगल भौली में निर्मित यह मंदिर आश्टांगयोग मल्हारराव होल्कर छत्री से उत्तराभिमुख की ओर स्थित है मंदिर छत्री बाबडी कूप के पि चमी पा र्व पर बना हुआ है। तल विन्यास में यह मंदिर पूर्वाभिमुखी है ।

मंदिर का निर्माण 28ग38 के चबूतरे पर किया गया है जिसमें सोपान लगे हुये है गर्भगृह का द्वार वि ाल है। इसमें घुमावदार अलंकरण है ललाट विम्ब पर गणे ा प्रतिमा ललितासन में प्रतिश्ठित है। मूसक वाहन का आलेखन आसन के समीप है गणे ा हाथ में त्रि ाूल सर्प एंव मोदक घारण किये हुये है यह मूर्ति चतुर्भुजी है । मंदिर के गर्भगृह में दक्षिणी ओर ि ावलिंग स्थापित है जिसके समीप ही नन्दी भी विराजमान है।

ईट चूने एंव पत्थर से बने हुये इस मंदिर के गर्भगृह के चारो ओर पृश्ठों पर रथिकायें अलंकृत है मंदिर के पि चम की ओर पांच तथा पूर्व और उत्तर की ओर तीन द्वार है ये सभी स्तम्भों एंव द्वारों द्वारा विभाजित है ।

(3) गर्भगृह की चोटी गुम्बद नुमा तथा दक्षिण पथ की चोटी गज पुश्टकृत है चारों कोनों पर गुम्बद नुमा छोटे शिखर है । इस मंदिर का निर्माण अहिल्यावाई होल्कर ने छत्री निर्माण से पूर्व ही करवाया था । [8]

वर्तमान में होल्करों के कुल देवता मार्तण्डे जी का यह मंदिर खण्डहर हो चला है स्थानीय लोग इस मंदिर को खण्डेराव मंदिर भी कहते है ।

उल्लेखित मंदिरों में स्थापत्य एंव ऐतिहासिकता के परिणाम स्वरूप आलमपुर परगना सांस्कृतिक वैभव के प्रतीक के रूप में स्थित है । अहिल्यावाई होल्कर द्वारा इस क्षेत्र में निर्मित मंदिरों की वास्तु शैली का अध्ययन ऐतिहासिक भाोध की दृश्टि से अत्यन्त रोचक तथा स्थापत्य की दृश्टि से अनूठा है। उनके द्वारा निर्मित अधिकां ा मंदिर ि ाव के है जिनमें नन्दी एंव शिवलिंग विराजमान है निर्मित किये गये एंव जीर्णोद्धार किये गये अनेक मंदिरों पर अभिलेख भी उत्कीर्ण है। इन मंदिरों के गर्भगृह सामान्यतः छोटे व धनुश के आकार की छत से सजे है । जो प्रांगण से घिरें हुये है मंदिरों के खम्बे दीवारों से जुडे हुये है जो लम्बाई में कम तथा मोटे नक्काशी से युक्त है। मंदिरों के अन्तराल मण्डप तथा गर्भगृह में आकर्शक मूर्तियॉ विराजमान है।

होल्कर निर्माण से सम्बन्धित परगने का शिलालेख हरिहरे वर मंदिर के कूप में स्थित है जो ऐतिहासिक दृश्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

संदर्भ गृन्थ सूची–

1. जिला गजेटियर भिण्ड वर्श –1996
2. होल्कर राजवं ा और आलमपुर – बीरेन्द्र सिंह चन्देल
3. अहिल्या स्मारिका पृश्ठ – 10–15 (1981)
4. ऐतिहासिक सर्वेक्षण एंव साक्षात्कार
5. राजवाडा रिकॉर्ड होल्कर ट्रस्ट आलमपुर फाइल नं0 27/1905

6. अहिल्या स्मारिका पृश्ठ –11 एंव 38 सन् 1981

7. ऐतिहासिक सर्वेक्षण एंव साक्षात्कार

8. होल्कर राजवं ा और आलमपुर – बीरेन्द्र सिंह चन्देल